हरियाणवी लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ विजय शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म कॉलेज अम्बाला छावनी

हरियाणा वह भूमि जहां हरि का आना हुआ। हरी–भरी इस धरती को ब्रह्मवर्त, आर्यवर्त प्रदेश के नाम से भी जाना जाता था। यह प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति का विशेष केन्द्र रहा है। महाभारत के युद्ध के समय में यह प्रदेश स्वयं में अपनी एक पहचान बन गया, इसी धरती से स्वयं भगवान कृष्ण ने अपने मुख से भगवदगीता का उपदेश दिया। और भारतीय दर्शन को सार्वकालिक और सार्वभौमिक बनाया। यहीं से सरस्वती का उद्‌गम माना जाता है। सरस्वती, यमुना, गंगा की पावन धाराओं से इसका पवित्रीकरण हुआ है। यहाँ साधु–संतों एवं ऋषि–मुनियों के प्रति अगाध श्रद्धा है। इसकी संस्कृति का आधार हवन–यज्ञ, पूजा–पाठ, जप–तप, भजन–कीर्तन, पुण्य–दान, वेद–पुराण, गीता–भागवत है।

इस प्रदेश की भाषा को हरियाणवी भाषा के नाम से जाना जाता है, जिसकी व्युत्पति हरियाणा में वी प्रत्यय लगने से हुई है। महाभारत काल में इस क्षेत्र को कुरु जनपद के नाम से जाना जाता था, इसलिए यहां की बोली को कौरवी भी कहा गया है। भाषा वैज्ञानिकों ने कौरवी को ही खड़ी बोली का रूप माना है। हर्षवर्द्धन के काल में यह क्षेत्र स्थाणेश्वर के नाम से जाना गया। हरियाणा नाथों, संतों, पीरों, फकीरों की कर्मभूमि रही है, जिन्होने हरियाणा की बोली को समृद्ध करने में अपना विशेष योगदान दिया है। हरियाणा की बोली में खडापन है और हास्य का पुट भी है। अपनी भाषा और सादगी के कारण इस क्षेत्र की अपनी विशिष्ट पहचान रही है।

हरियाणा कर्मठ किसानों और जीवन्त जवानों की धरती है। यहाँ के लोगों ने अन्न क्षेत्र से लेकर रण क्षेत्र तक अपनी मेहनत और बहादुरी के कीर्तिमान स्थापित किए हैं। स्वतन्त्रता आंदोलन में हरियाणा के वीरों ने अतुल्य भूमिका निभाई और आज़ादी की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाांधी के आन्दोलन हो या श्री सुभाषचन्द्र

बोस का आह्वान, हरियाणा के वीरों ने बढ़–चढ़कर उनमें भाग लिया था। अंग्रेज सरकार ने सन् 1856 में पुरानी बन्दूकों की जगह नई रायल एन्फील्ड राईफलें बनाई। इनमें जो कारतूस डालते थे, वे गाय और सूअर की चर्बी से बनते थे। इनका फीता दाँत से काटकर बन्दूक में कारतूस डाला जाता था। सन् 1857 में जब यह राइफले सैनिकों को दी गई उनको इस बात का पता चला कि गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूस दाँतों से काटने पड़ेंगें तो हिन्दू एवं मुस्लमान भड़क उठे और उनके असंतोष ने ज्वालामुखी का रूप ले लिया। 10 मई 1857 को अम्बाला और मेरठ छावनियों में विद्रोह फूट पड़ा।

लोकमानस की झलक लोक साहित्य में होती है और यही लोक साहित्य लोकमानस को संवारता है, निखारता है, दिशा प्रदान करता है। लोक साहित्य की सबसे सशक्त एवं प्रभावशाली विधा है– लोकनाटक। लोकनाटक संस्कृति को जिस सहजता, सहृदयता और सरसता से सहज कर रखते हैं उतना लोक साहित्य की कोई अन्य विधा नहीं रख पाती। लोकनाट्य में लोक जीवन की समग्र भावनाओं, कल्पनाओं, वास्तविकताओं का दर्शन होता है। इनमें सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहती है। सर्वमंगल कामना से ओत–प्रोत हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत से उसका लोक साहित्य भरा पड़ा है। लोकनाट्य, जिसे हरियाणा में सांग के रूप में जाना जाता है। सांग शब्द स्वांग का अपभ्रंश रुप है। हरियाणा में सांग का आरम्भ 18वीं शताब्दी में सांगी किशन लाल भट्ट से माना जाता है। बंसीलाल, दीपचन्द, हरदेव, बाजेभगत, रामकिश्न व्यास, मांगेराम, लख्मीचन्द, जगबीर राठी, भारतभूश्ण सांघीवाल आदि अन्य अनेक सांगी हुए। सांग की इस परम्परा में हरियाणा–संस्कृति की अनेक झलकियां देखने को मिलती हैं, जिनमें मनोरंजन के साथ– साथ अनेक जानकारियां भी उपलब्ध हैं। अभिनय, गायन, संवाद और नृत्य के माध्यम के पौराणिक, ऐतिहासिक, धर्मिक,लौकिक गाथाएं, आख्यान, किस्से, कहानियां, अन्य प्रसंग सुनाना एवम् दिखाना इन सांगो का मूल उद्देश्य रहा है। इनके माध्यम से ही हरियाणा की प्राचीन संस्कृति एवम् सभ्यता जीवन्त है।

दीपचन्द के सांग कलयुग और सतयुग का अन्तर प्रस्तुत कर जनता को चेताने का प्रयास करते हैं–

जिस दिन तै कलयुग आया , जप तप नेम–धरम छूटा सै

बाजेभगत के सांग कृष्ण जन्म, यदुवंश का किस्सा, कंस जन्म की तथा कालनेमिकी कथा का मनोरंजक वर्णन करते हैं।

लखमीचन्द ने पौराणिक आख्यानों के माध्यम से आध्यात्मिकता के अनेक दर्शनों का मनोहारी मंचन किया । पूरणमल सांग में मृत्यु की शाश्वतता का वर्णन करते हुए उन्होने कहा–

आवागमन रही लाग जगत मैं रात मर्‌या कोई दिन मरग्या

नल–दमयंती, चीरपर्व, सत्यवान– सावित्री, मीराबाई सांगो में नारी की व्यथा के विविध रुप देखने को मिलते हैं। मांगेराम ने भी 'शकुन्तला–दुष्यन्त के किस्से में भारत के अतीत का, दुर्वासा के क्रोध का, शकुन्तला के जन्म की कथा का सुन्दर चित्रण किया है। इन सांगों में प्राचीन के प्रति प्रेम इनकी राष्ट्रीय चेतना का द्योतक है। हरियाणवी कवियों का अपनी मातृभूमि, भाषा, खान–पान, वेश–भूषा, व परिवेश के प्रति विशेष प्रेम है। 'जननी जन्मभूमिश्चः स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ कर है, इस भावना से अनुप्राणित हरियाणा के वीरों की गाथाएं लोकगीतों व लोकनाट्य में बिखरी मिलती हैं। जय नारायण कौशिक द्वारा रचित हरियाणवी साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत है, कवि ने हरियाणा को ब्रह्मा द्वारा रचित प्रदेश मानते हुए मातृभूमि की वंदना करते हुए लिखा है–

''हर की भूम्मी हरियाणा तने
बार–बार हम सीस निवावाँ
ज्ञान ध्यान की इस धरती के
आठ्हुँ पहर सदा गुण गांवां''

कवि कविता में हरियाणा के वैभव व इस धरती माता के उपकारों और खुशहाली का वर्णन करते हुए कहता है,कि

नंदन बण–सी इत हरयाल्ली ,इसके खेत हिलोरे मारैं
अनधन के भंडार भरें रहैं ,दुखियों के सब कारज सारैं

कवि रामेश्वर दयाल शास्त्री अपनी कविता देशों मैं देश हरियाणा में हरियाणवी गाभरु उनके बल, खेल व खान–पान के बारे में लिखते हैं–

छह फुट का छैल छबीला था जडै गाभरु छोरा
धोती नीची बाँधै था और गल मैं काला डोरा
खेले था खूब कबड्डी भोरी मुगदर ठावै था
––––––––––––––––
घी सेर पी ज्याता गज छाती की चौडाई
जोटा भी जिसकी लाठी न ओट सकै था भाई

मूलचन्द वर्मा ने अपनी कविता सुथरी बोली हरियाणे की में यहां की बोली, खान–पान, खेती–बाडी की बात अपने अनोखे अंदाज में करते हुए

कहते हैं

हरियाणे की सबसै मीठी सुथरी साथरी भाशा भूशा
रोता राता माणस मूणस, हाँसै हूँसैं खासा खूसा

भारत भूषण सांघीवाल– कवि का हृदय प्रेम से परिपूर्ण है। जब कवि किशोर था तब देश में स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहे थे। जिनसे उसका किशोर मन अत्यंत प्रभावित हुआ और देश के प्रति प्रेम भाव मन में जागे। कवि ने देश भक्त वीरों वीरांगनाओं को अपने काव्य में प्रमुख स्थान दिया 'रागनी–कहण उधम सिंह का' में लिखते हैं–

भारत माता के वीरों ने, सीख्या नहीं डरणा रै।
जुल्म अत्याचार का विरोध डट कै करणा रै।
अंग्रेजों को ललकारते हुए कवि कहता है–
जुल्मी दगाबाज से गोरे, उनतै सबक सिखाणा होगा।
पड़ी जरूरत तै फांसी के, तख्ते पै चढ़ ज्याणा होगा।

आज़ादी के लिए 'मर मिटने की भावना' को एक मात्र रास्ता बताते हुए रागणी–खत उधम सिंह का में वह कहते हैं–

आज़ादी की दैवी भाई, मांगे सै कुर्बानी रै
जिन्दगी आणी जाणी रै, यू अमर रहैगा काम मिरा।

आपसी एकता पर बल देते हुए उन्होंने लिखा–

जिस घर में एक्का नहीं, रोज रहे तकरार
नहीं कदे भी हो सकै, उसका बेड़ा पार

जगवीर राठी– जगवीर राठी के काव्य में भारतीय सैनिकों के प्रति सम्मान का भाव है। देश की रक्षा के लिए मर–मिटने वाले सैनिकों के लिए अपने आदर भाव प्रकट करते हुए कहते हैं–

जय–जय हिन्द के वीर जवान
तेरी सूरत पै जाऊँ कुर्बान
आया जब दुश्मन भक्षक बण कै
सरहद पै अड़या तू रक्षक बण कै
बैरी का न छोड़े निशान
जय जय हिन्द के वीर जवान

भारतीय सैनिकों के साहस और दुश्मनों ने उनके भय का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

एक–एक दुश्मन की दुश्मन होरी सै मां म्हारी गोली

पीठ दीखा के भाजती देखी हामनै दुश्मनां की टोली

जगवीर राठी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के सभी रूप देखने को मिलते हैं। मातृभूमि का प्रेम, मां का प्रेम, देश पर मिटने वाले सौनिक दुश्मनों पर भारी पड़ते हैं। अपनी मां को अपनी राष्ट्रभक्ति की गाथा सुनाते हुए सैनिकों पर लिखी 'सुनिये मेरी मां कविता अत्यंत मार्मिक, सजीव एवं राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत है।

गोली लाग कै उल्टी मुडज्या इसा लोह का पूत तेरा
अगले जनम मैं फेर जणिय मेरै तै मोह तुडाइये मत ना
हे मां खतरा तो बहोत सै, पर तू घबराइये मत ना
अर जै ना भी आ पाउं तो नीर बहाइये मत ना

तारादत्त विलक्षण– के 'गुण गाऊं माटी का' में मातृभूमि का गुणगान किया। कवि मातृभूमि के प्राकृतिक और मानवीय सौन्दर्य का सजीव चित्रण करता है तथा इस धरती पर खुशियों के फूल खिलाकर समता की सुगंध बिखेरने की इच्छा व्यक्त करता है। वह मातृभूमि की रक्षा हेतु सदैव मर मिटने को तैयार है। समस्त विभिन्नताओं को दूर कर एकता की स्थापना करना चाहता है।

के गुण गाऊं माटी का
तिलक लगाऊं माटी का
मेरे देस की माटी तेरे पै अभिमान सै
जननी जन्मभूमि मेरी तू सुरग तै घणी महान सै
तेरी आन शान की ओड़ जो हाथ उठेगे तोड़ दूँगा मै
बुरी नजर तै देखैगी जो आँख उसनै फोड़ दूँगा मै

शहीदों को श्रद्धाजंलि में कवि कहता है–

तमनै मेरा प्रणाम शहीदो तमनै मेरा प्रणाम
भारत के इतिहास मैं थारा अमर रहैगा नाम
भारत मां की खातिर तम नै कर दी खतम जवानी
याद करेगी आवण आली पीढी थारी कुरबानी

तारादत विलक्षण ने अपने तिरंगे झण्डे के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए अपनी देश भक्ति का परिचय दिया है–

सब तै उंचा सब तै सुन्दर झण्डा श्रेश्ठ हमारा सै।
जणे जणे की आंख का उज्जवल भाग का तारा सै ।।
देश की गौरव गाथा सै यू हिन्द देश की शान तिरंगा।

सूत्र एकता का भारत की चक्करदार महान तिरंगा।।
धर्म चक्र से अशोक सारे जग तै न्यारा सै।

कवि विलक्षण ने तिरंगे के हरे रंग को सुख का, खुशहाली का, समृद्धि का, प्रतीक बताया और हमेशा इसके मुक्त गगन में लहरने की कामना की। सफेद रंग को शान्ति का, समभाव का, सर्वधर्म का,पवित्रता का,उजियारे का, व शीतलता का प्रतीक बताते हुए कहते हैं कि यह सभी के मन में प्रेम व सदभावना का संचार करता है। इसका केसरी रंग शक्ति और तेज का सूचक है, जो अमर शहीदों के बलिदान की याद दिलाता है,जिन्होने इसके सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। कवि इसकी रक्षा के लिए क्हता है–

हम इसने नहीं झुकणे द्यागें और उचा लहरावांग
कदम बधेंगे आगै मिलकै गीत जीत के गांवांगे
एक थे एक सौ एक रहांगै विलक्षण एक ही नारा सै
सबतै उंचा सबतै सुन्दर झंडा म्हारा सै

जगदीश चन्द्र वत्स ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज के आधार गुरु, शिक्षा व विवेक पर बल दिया –

हे जी! हे जी! ज्गत में है विद्या का सब खेल।
बिन विद्या के भारतवासी रहे मुसीबत झेल।।

हरिकेश पटवारी सामाजिक बुराइयों व लोभ, मोह नशे से दूर रहने का परामर्श देते हुए लिखते हैं–

लोभ सबसे बुरा, यह है दूध भरा छुरा।
करदे किस्सा खत्म, ना लागै एक पल

कंवल हरियाणवी ने सत्य की महिमा, गो रक्षा व मानवता की बात करते हुए कहते हैं–

जिस बिध राखै राम उसी बिध रहणा ठीक सै
मानवता के हित मैं दुखडा सहणा ठीक सै

फौजी मेहर सिंह ने अपनी युवा अवस्था में नेता जी सुभाशचन्द्र बोस की आज़ाद हिंद सेना में काम किया। किसान के बेटे होने और फौज में काम करने के कारण फौजी मेहर सिंह के काव्य में फौजी के जीवन का और किसान की मार्मिक स्थिति यथार्थ चित्रण किया है–

देख रेंगटे खडे होगें या मेरी छाती धडकै
गरीब किसान की जिन्दगी क्युंकर बितै सै मर पडकै

इस प्रकार हरियाणवी लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न रुप दिखाई देते हैं। यह धरती वीरों की धरती है जिस पर महाभारत, पानीपत जैसे अनेक युद्ध लड़े गए। अपनी मातृभूमि का प्रेम व इस की रक्षा का भाव इसके कण–कण में जन–जन में व्याप्त है। इस प्रदेश के लोग मिट्टी से जुड़े हैं किसान और जवान इसकी मूल पहचान हैं।

संदर्भ सूची –

1. पं लख्मीचन्द ग्रन्थावली, डा पूर्ण चन्द शर्मा
2. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य– डा शंकर लाल यादव
3. हरियाणा लोक नाट्य परम्परा –रघुबीर सिंह मथाना
4. 1857 की जन क्रान्ति में हरियाणा का योगदान, लेखनक रामसिंह जाखड़
5. स्वर्णिम हरियाणा – डॉ. पूर्णचन्द शर्मा
6. हरियाणा का हिन्दी साहित्य – संपादक डॉ. लाल चन्द गुप्त मंगल
7. हरियाणवी लोकधारा